



जवान मौसी की चूत दोबारा मिली- 4

“हिंदी ओपन सेक्स स्टोरी मेरी जवान मौसी की चूत चुदाई की है. मैंने खुली छत पर रात को चाँद की रोशनी में मौसी को पूरी नंगी करके चोदा. ...”

Story By: (56rahulverma)

Posted: Monday, August 2nd, 2021

Categories: [चाची की चुदाई](#)

Online version: [जवान मौसी की चूत दोबारा मिली- 4](#)

जवान मौसी की चूत दोबारा मिली- 4

हिंदी ओपन सेक्स स्टोरी मेरी जवान मौसी की चूत चुदाई की है. मैंने खुली छत पर रात को चाँद की रोशनी में मौसी को पूरी नंगी करके चोदा.

कहानी के पिछले भाग

जवान मौसी को चोद कर मजा दिया

मैं आपने पढ़ा कि मैं मौसी को एक बार चोद चुका था. तभी उनकी जेठानी आ गयी और चार दिन की चुदाई मस्ती का हमारा कार्यक्रम ठप्पा होता दिखा.

रात को तीनों सो गए.

बीच रात में मैं मौसी को उठाकर छत पर ले गया चुदाई के लिए.

अब आगे हिंदी ओपन सेक्स स्टोरी :

कितनी देर तक हम उसी तरह बांहों में सिमटे रहे. उसके बदन की गर्मी से मैं भी उत्तेजित हो गया और मेरे हाथ स्वतः ही उसकी पीठ को सहलाने लगे।

कुछ देर बाद जब मैंने उसे अपने सीने अलग किया तो उसकी आँखें नम हो गयी थी और गला रुंध आया था।

उसने अपनी रुंधी हुई आवाज़ में मुझसे कहा- मुझे फिर से अपना बना लीजिए!

आगे बढ़ कर मैंने उसकी आँखों को पौँछा और उसके सुलगते हुए होंठों पर अपने होंठ रख दिये।

मैंने रूपाली के निचले होंठ को अपने दोनों होंठों के बीच में दबा कर चूसते हुए उसकी चूचियों को हाथों से मसलने लगा।

कुछ देर तक हाथों से उसके बदन पर कलाकारियाँ करते हुए रूपाली भी गर्म होने लगी थी जिसके चलते रूपाली ने अपनी जीभ मेरे मुँह में ठूस दी और मेरी जीभ से अपनी जीभ लड़ाने लगी।

उसके निप्पल बाहर की ओर उभर आये और चूचियाँ भी कड़क हो गयी थी।

हमारे मुँह से लगातार उम्मम ... म्मम्म ... जैसी आवाज आ रही थी. हम दोनों में से कोई भी इस चुम्बन को तोड़ना नहीं चाह रहा था खासकर रूपाली तो बिलकुल भी नहीं। इसलिये मैंने ही आगे बढ़ने की सोची और रूपाली की मैक्सी को अपनी मुट्ठियों में भरकर ऊपर सरकाते हुए उसके बदन से अलग करने लगा।

रूपाली ने भी मेरी मदद करते हुए अपने दोनों हाथों को असमान की ओर समान्तर उठा लिया और मैंने उसकी मैक्सी को उसके हाथों से निकाल कर उससे अलग कर दिया.

न तो उसने अन्दर ब्रा पहन हुई थी और न ही पैंटी।

जिस रूपाली को मैं कमरे से खुले असमान के नीचे बुलाकर लाया था उसका शिकार करने के लिये असल में मैं खुद एक शिकार की तरह उसके सामने खड़ा था।

मेरे सामने रूपाली इस वक्रत अजंता की किसी कलाकृति की तरह नग्न अवस्था में खड़ी थी।

चाँद की रोशनी में रूपाली का नंगा, बिना बालों वाला दूधिया जिस्म ऐसे चमक रहा था जैसे उसे चाँदी के पानी से नहला दिया गया हो।

किसी ने ठीक ही कहा है कि चाँद लोगों को अपनी ओर केवल सोलह कलाओं से आकर्षित कर सकता है जबकि औरतें किसी को भी अपनी ओर उससे ज्यादा कलाओं से आकर्षित कर सकती हैं.

मैं रूपाली के बड़े से क्लीवेज को चाटते हुए उसकी एक चूची को मुंह भर कर चूसने लगा और दूसरी को हाथ से सहलाना शुरू कर दिया।

उसने भी मस्ती से मेरे बालों को अपनी उँगलियों से सहलाना शुरू कर दिया। जब कभी उसकी चूचियों को मुट्ठियों में भर कर दबा देता या फिर उसके निप्पलो को ऐंठ देता तो रूपाली और ज्यादा उत्तेजित हो जाती।

कुछ देर तक उसकी चूचियों को बारी बारी पीने के बाद मैं उसके पेट को चाटते हुए नाभि पर जा पहुंचा।

जितना मैं उसकी नाभि को जीभ से छेड़ता, उतना ही उसकी सांसें नियंत्रण से बाहर हो जाती और उसके मुंह से कामुक आआहूह निकल जाती।

कुछ देर बाद मैं अपने घुटनों पर बैठ गया और उसकी मांसल जांघ को चाटने लगा। कभी-कभी जाँघों को चाटते वक़्त दोनों जांघ के बीच से होते हुए उसकी चूत को जीभ से छूकर लौट जाता तो रूपाली वासना से कलप जाती।

कुछ देर तक वो अपनी नंगी चूत से होते खिलवाड़ को बरदाश्त करती रही लेकिन जब वो खुद पर अधिक काबू न रख सकी तो उसने मेरे सिर को बालो से पकड़ कर मेरा मुंह चूत से सटा दिया।

मैंने चूत से बहते हुए प्रीकम को जीभ से चाट कर साफ़ किया और उन गुलाब की तरह नाजुक चूत की पंखुड़ियों को जीभ छेड़ कर चूसने लगा।

कभी चूत की लकीर को जीभ से ऊपर नीचे करते हुए चाट लेता तो कभी जीभ को नुकीला करते हुए उसकी चूत के अंदर की गुलाबी नर्म दीवारों को सहलाने लगता।

रूपाली अपने हाथों से मेरे सिर पर दबाव बनाते हुए कमर को आगे पीछे करने लगी जैसे

वो मेरी जीभ को चूत के आखिरी छोर तक पहुँचना चाहती हो।

अब उसके मुँह से लगातार आअह्ह ... ह्ह्ह ... उफ्फ ... स्स्स ... उम्म ओह माँ श्शश ... जैसी सिसकियाँ निकलने लगी थी।

फिर मैंने अपने दायें हाथ की बड़ी उंगली को उसकी चूत में उतार दिया और उसकी चूत के दाने को दाँतों में दबा कर चुभलाने लगा।

लगातार उसके फड़कते हुए दाने को जीभ से सहलाने और उंगली से उसके जी-स्पॉट को छेड़ने से रूपाली और भी उग्र हो गई थी।

जिसके चलते उसने अपनी जांघों का घेरा मेरी गर्दन पर और कस दिया।

अगर मैं उसकी चूत को इसी तरह चाटता रहता तो शायद वो किसी भी वक़्त अपने काम शिखर को प्राप्त करके झड़ जाती।

इसलिये मैंने चूत को चाटना छोड़कर उसकी जांघों से गर्दन को आज़ाद करा लिया और उठ खड़ा हुआ।

रूपाली ने मुझसे कहा- क्या हुआ ? रुक क्यों गए ? आपको दिखता नहीं कि मेरा होने वाला था.

मैंने अपने द्वारा की गई इस हरकत का कोई जवाब देना उचित नहीं समझा और उत्तर देता भी तो क्या !

अब मैंने अपने लोवर और टीशर्ट उतारकर उसकी मैक्सी के उपर रख दी।

मैंने रूपाली का हाथ पकड़ा और छत पर लगी रेलिंग की तरफ चलने को कहा।

इस वक़्त खुले असमान के नीचे दो नंगे जिस्म विचरण कर रहे थे ; ऐसा लग रहा था जैसे दो हिरनों का जोड़ा जंगल में सम्भोग करने के लिये घूम रहा हो।

अभी तक की हो रही हर घटना के बारे में सोच कर मेरा मन कुलाँचे मार रहा था।

रेलिंग के पास पहुँच कर उसने आगे झुक कर देखा, मानो जैसे वो शत प्रतिशत आश्वस्त होना चाहती हो कि कोई हम दोनों को देख तो नहीं लेगा।

जब उसे दूर तक कोई इंसान नहीं दिखा, तब मैंने उसके दोनों हाथों से उसे रेलिंग पकड़ा दी और उसकी कमर को थोड़ा अपनी तरफ निकालकर उसे झुका दिया।

मैंने उसके दोनों नितंबों पर हाथ फेरा और उसकी पीठ से बाल हटा दिए।

फिर मैंने अपनी जीभ उसकी नंगी पीठ पर रख दी और घुमाने लगा।

सबसे पहले मैंने अपनी जीभ से उसकी गर्दन को चाटना शुरू किया और नीचे सरकने लगा। उसके कंधों को चूमने लगा।

तभी मैं अपने हाथ आगे ले जाकर अचानक से उसकी रूई के समान नर्म फाहे जैसी चूचियों को पकड़ के दबाने लगा।

थोड़ा और नीचे जीभ को सरका कर उसकी लचकती हुई कमर को जोर जोर से चाटने लगा। मेरी लार से उसकी पीठ पूरी गीली हो गई थी जो चाँद की रोशनी में शीशे की तरह चमक रही थी।

मेरी जांघें उसके चूतड़ों से सटी हुई थी और लंड भी रह-रह तुनके मार के उसकी चूत को छू रहा था।

जब भी कोई ठंडी हवा का झोंका उसकी गीली पीठ को छू जाता तो वो जोर से काँप जाती।

कुछ कम्पन तो सर्द हवा से थी और कुछ शायद खुले आसमान ने नीचे चूत से छूते लंड और आगे होने वाली जोरदार चुदाई के ख्याल से हो रही होगी।

क्योंकि हर उम्र की औरत का ख्वाब होता है कि काश कोई खुले असमान के नीचे चांदनी रात के बीच एक बार उनकी चूत को चाट के तर कर दे और चूत में लंड टूस के ताबड़तोड़ चुदाई कर दे.

फिर चाहे वो अभी-अभी जवान हुई कोई कमसिन कली या फिर अनेकों बार चार दीवारों के भीतर चुदी हुई नारी ।

मेरा लंड भी अब तक इतना तन चुका था कि ऐसा लग रहा था कि अभी जड़ से टूट जाएगा ।

मैंने रूपाली से लंड चूस के गीला करने को कहा तो रूपाली भी आज्ञाकारी पत्नी की तरह अपने घुटनों पर बैठ गई और मेरे लंड को अपने दोनों होंठ के बीच में दबा के चूसने लगी । कुछ आठ दस बार बार लंड को मुंह में आगे पीछे करने के बाद मैंने लंड उसके मुंह से निकाल लिया तो रूपाली भी वापस रेलिंग पकड़ के पहले जैसे झुक गई ।

मैंने अपने हाथ में थोडा सा थूक ले कर पीछे से उसकी पनियाई हुई चूत के उपर चुपड़ दिया ।

फिर मैं अपने लंड पर दबाव बनाते हुए धीरे से चूत के अन्दर घुसाने लगा ।

पहले किसी बड़े आंवले की तरह फूला हुआ सुपारा अंदर गया और रूपाली की चूत में लंड के लिये रास्ते को सुगम बनाने लगा ।

धीरे धीरे लंड पर दबाव बनाते हुए लंड को सरकाने लगा कुछ देर बाद मेरा समूचा लंड रूपाली की चूत की गहराइयों में खो गया और मेरी कमर रूपाली की कमर से सट गई ।

अब रूपाली ने अपने सिर को रेलिंग पर टिका लिया और मुझे चुदाई शुरू करने का इशारा किया ।

मैंने उसकी कमर को अपने दोनों हाथों में थाम लिया और अपने लंड को आगे पीछे करते हुए उसकी चुदाई करने लगा।

जितने प्यार से मैं लंड को बाहर करता, उतने ही प्यार से वापस अंदर ठोक देता।

इस प्यार भरी चुदाई के चलते रूपाली की आँखें स्वतः ही बंद हो गयी जैसे इस चुदाई से उसकी चूत नहीं बल्कि उसके मन को तृप्ति मिल रही हो।

जब कभी घर से कुछ दूरी पर गुजरती हुई मुख्य सड़क से कोई वाहन चारों ओर फैले हुए सन्नाटे को चीरते हुए तेजी से गुजर जाता तो रूपाली अपनी आँखें खोल लेती।

और जैसे ही हमारी आँखें एक दूसरे से टकराती तो रूपाली के मुँह पर मुस्कान तैर जाती और फिर से अपनी आँखें बंद कर लेती।

कुछ देर बाद मैंने धक्के लगाने बंद कर दिए तो रूपाली ने आँखें खोल के प्रश्नवाचक दृष्टि से रुकने का कारण पूछा।

तो मैंने रूपाली से कहा- देखो रूपाली, कितना अनोखा और कितना उत्तेजित नज़ारा है। चांदनी रात है आसमान में असंख्य तारे हैं। मेरे सामने मेरी चाँद सी सुंदर बीवी नंगी खड़ी है और उसकी चूत में घुसा हुआ मेरा लंड। हमें देख कर चाँद भी शर्मा जाता है और बार बार खुद को बादलों में छुपा लेता है।

रूपाली ने भी एक सरसरी नज़र आसमान में घुमाई और बोली- जितना आप चुदाई करने में उस्ताद हो ... उतना ही बातें बनाने में! बातें बनाना तो कोई आपसे सीखे!

फिर मौसी बोली- नीचे दीदी अकेली हैं। और हमें भी ऊपर आए काफी समय हो गया है।

जल्दी से करो ... फिर नीचे चलते हैं। नहीं तो दीदी जाग जायेंगी।

“जो हुकुम मेरी रानी!” मैं बोला।

मैंने वापस से लंड को चूत में अन्दर बाहर करना शुरू कर दिया लेकिन इस बार जोरदार धक्के के साथ मैं अपने लंड को पूरा बाहर निकालता और एक बार में पूरा लंड वापस से उसकी चूत में घुसा देता ।

रूपाली ने रेलिंग को जोर से पकड़ रखा था लेकिन हर धक्के के साथ उसके हिलते हुए जोबन बता रहे थे कि उसकी चूत मेरे लंड के कितने जोरदार वार को झेल रही थी ।

कुछ देर बाद उसके मुंह से सिसकियाँ निकलने लगी- आअह्ह ... आह्ह ... ह्ह्ह ... उम्म ... माँ ... श्शश ... उफ्फ ... ऐश्श ... हायय..सीईई ... इस्स ... आह्ह मेरी जान ... मार मेरी चूत को ! आज मिटा दे इसकी खुजली ! साली बहुत खुजलाती है ... तुझे बुलाया था अपनी चूत खुजली मिटाने के लिये ... लेकिन ये साली हरामजादी नीतू कहाँ से आ गयी ! लेकिन अब तू रुकना मत ... चोद मुझे पूरा दम लगा कर ।

रूपाली न जाने क्या-क्या बोले जा रही थी ।

उधर मैं भी उसकी चूत में ताबड़तोड़ धक्के लगाये जा रहा था ।

मुझे रूपाली की चुदाई करते हुए अब पंद्रह मिनट से ऊपर हो गये थे.

तभी वो जोर सिसकारती हुई चिल्लाने लगी- रुकना मत मेरे राजा ... मैं आने वाली हूँ ...

आह्ह ... आह्ह ... ईईई मैं आई ... मैं आई !

कहते हुए उसकी चूत ने अपना रस छोड़ दिया ।

उसकी चूत से रिसता हुआ रस उसकी जाँघों पर लकीर बनाता हुआ जमीन पर गिरने लगा ।

उसकी चूत की दीवारें रह-रह कर मेरा लंड अंदर खीच रही थी ।

सम्पूर्ण रूप से झड़ने के बाद रूपाली मौसी पस्त हो गयी तो मैंने उसकी कमर को सहारा देकर पकड़ लिया ।

मैंने उसे अपनी बांहों में उठा लिया और दीवार के कोने में पड़े पुराने तख्त पर लिटा दिया और खुद भी उसके बगल में लेट गया।

कुछ देर बाद मैंने उसके होंठों को चूम लिया और उससे फिर से चुदाई के बारे में पूछा। तो उसने भी मुझे अपने ऊपर आने को बोला।

मैं रूपाली के ऊपर आ गया और उसके होंठों को चूमते हुए उसकी चूचियों को दबाने लगा।

फिर उसकी एक चूची को मुंह में भर कर चूसने लगा और नीचे से धीरे- धीरे उसकी चूत में लंड को उतारने लगा।

लंड अंदर जाने के बाद मैंने उसकी दोनों चूचियों को हाथों में पकड़ लिया और धक्के लगाने लगा।

उसकी गीली चूत में मेरा पनियाया हुआ लंड सटासट तेजी अंदर बाहर हो रहा था। पूरी छूत में चुदाई की आवाज़ आ रही थी, मेरे टट्टे उसकी चूत से टकरा कर ठप ठप ठप का शोर कर रहे थे।

थोड़ी देर में रूपाली फिर से गर्म होने लगी उसके हाथ मेरी पीठ पर घूमने लगे और उसने अपनी गर्दन को उचका कर मेरे होंठ को अपने होंठ से चूमना चालू कर दिया।

एक बार फिर रूपाली के मुंह से गर्म आहें निकलने लगी थी- आअह्ह ... आईईई ... उम्म ... मम्म ... ईईईश्श ... यस ... यस ... ओह्ह गॉड ऐसे ही चोदो।

रूपाली ने अपनी टांगों का मजबूत घेरा मेरी कमर पर बना लिया था।

मैं भी रूपाली के कंधों को पकड़ के जोर-जोर से चूत के चीथड़े उड़ाने में लगा हुआ था।

तभी कुछ देर बाद रूपाली बदन को उचकाने लगी.

मैं समझ गया था कि रूपाली फिर से झड़ने वाली थी इसलिये मैं और तेजी से चूत को कूटने लगा।

फिर रूपाली ने मुझे अचानक अपने सीने से चिपका लिया और आहूह ... आअहूहूह ...

आआईइ ... स्स्स करते हुए झड़ने लगी थी।

उसकी चूत से बहते रस की गर्मी से मेरे लंड की नसें भी तन गई थी ; टट्टे भी रस से भर कर भारी हो रहे थे और मैं कभी भी झड़ सकता था.

इसलिये मैं अपने लंड को बाहर निकाल के झड़ना चाहता था.

लेकिन तभी मेरी नज़र अचानक से दरवाजे के पास एक परछाई पड़ी।

ऐसा लगा जैसे कोई हमें देख रहा है.

जब तक मैं कुछ सोच पाता ... तब तक मेरे लंड ने रूपाली की चूत में लावा उगलना शुरू कर दिया था.

पहले एक ... फिर दो ... फिर तीन ...

इस तरह मेरे लंड ने रूपाली की चूत में कई सारी पिचकारी मारी और उसकी चूत को लबालब भर दिया।

नीचे देखा तो मेरा वीर्य और रूपाली का कामरस मिश्रण बन के चूत से बाहर आ रहा था।

मैंने एक नजर वापस से दरवाजे पर डाली तो इस बार कोई परछाई नहीं दिखाई दी।

तो मैं भी इसे अपना वहम समझ कर रूपाली के बगल में लेट गया और हम अपनी सांसें नियंत्रित करने लगे।

इस लम्बी और घमासान चुदाई से हम दोनों खुले आसमान के नीचे भी पसीने से तरबतर हो गये थे।

कुछ देर बाद रूपाली ने मुझसे पूछा- आज आपने अन्दर ही अपना माल क्यों छोड़ दिया ? तो मैंने बहाना बना के बात टाल दी क्योंकि मैं उसे परछाई के बारे में बता के उसे परेशान नहीं करना चाहता था ।

रूपाली ने कपड़ों के ढेर में से एक कपड़ा उठा के पहले मेरा लंड पौँछा फिर अपनी चूत को अच्छे से साफ़ करके हम नीचे बेडरूम की ओर चल पड़े ।

बेडरूम में नीतू पहले जैसे ही बेड पर पड़ी हुई थी और हम भी अपने अपने बिस्तर पर जा कर सो गये ।

दोस्तो, यहाँ पर पहला दिन समाप्त हुआ अभी तीन दिन शेष है तो कृपया मेरे साथ बने रहे और कहानी का लुत्फ़ उठाये ।

आप सभी को मेरी हिंदी ओपन सेक्स स्टोरी कैसी लगी ? आप अपने सन्देश मुझे 56rahulverma@gmail.com पर भेजें ।

अब आप सभी मुझसे अपने विचार फेसबुक पर भी साझा कर सकते हैं ।

हिंदी ओपन सेक्स स्टोरी का अगला भाग : [जवान मौसी की चूत दोबारा मिली- 5](#)

Other stories you may be interested in

जवान मौसी की चूत दोबारा मिली- 5

हॉट मौसी की चुत कहानी में पढ़ें कि रात में मौसी की जेठानी ने मुझे मौसी की चूत चोदते देख लिया था. सुबह को उन्होंने हमारे साथ क्या बर्ताव किया ? हॉट मौसी की चुत कहानी के पिछले भाग जवान मौसी [...]

[Full Story >>>](#)

किस्सा ए दफ्तरी चुदाई- 4

ऑफिस Xxx हिंदी कहानी में पढ़ें कि मेरी लेडी पियोन अपनी जवान बेटी को जॉब पर रखवाने के लिए ऑफिस में लेकर आयी. उसे देख मेरा लंड पैन्ट फाड़ने को हो गया. दिनांक 3 फरवरी 2021 को प्रकाशित मेरी कहानी [...]

[Full Story >>>](#)

जवान मौसी की चूत दोबारा मिली- 3

मौसी की चुदाई कहानी में पढ़ें कि ओरल सेक्स में मौसी को मजा देने के बाद मैंने उसे कैसे चोदा. मौसी ने मेरे लंड का भरपूर मजा लिया. मैंने भी जम कर ठोका उसे ! कहानी के पिछले भाग जवान मौसी [...]

[Full Story >>>](#)

लंड चुत गांड चुदाई का रसिया परिवार- 11

फर्स्ट टाइम सेक्स की कहानी में पढ़ें कि मैं अपने भाई से कैसे चुदी उसके बिस्तर पर ... मैंने पहल करके उसे अपने साथ सेक्स करने के लिए मनाया और चुद गयी. हैलो मित्रो, मैं सोनिया फिर से अपनी सेक्स [...]

[Full Story >>>](#)

जवान मौसी की चूत दोबारा मिली- 2

देसी गांड Xxx कहानी मेरी सगी मौसी की गांड चाटने की है. मैंने मौसी को नंगी कर लिया था और उसके चूतड़ चाट रहा था. तभी मैंने चूतड़ खोलकर गांड में जीभ लगा दी. कहानी के पहले भाग जवान मौसी [...]

[Full Story >>>](#)

